Socio-Economic and Technological Advancements in 21st Century India

21वीं सदी में भारत में सामाजिक–आर्थिक और तकनीकी प्रगति

Editors

Rabindra Kumar

Jyoti Sah

Deen Dayal Upadhyay Government P.G. College

Sitapur (U.P.)

Scanned by CamScanner

 ISBN: 978-81-947346-4-2

डोकलाम भारत की सक्रिय विदेश नीति

शेखर सिंह
विभागाध्यक्ष–राजनीति विज्ञान विभाग
दीनदयाल उपाध्याय राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
सीतापुर।

सीमा विवाद पड़ोसी देशों के साथ भारत का मुख्य मुद्दा रहा है। डोकलाम सीमा विवाद का ही एक प्रकट रूप है। चीन के साथ सीमा विवाद के मुद्दे पहले भी रहे हैं तथा इस संबंध में चीन से एक युद्ध भी हो चुका है। अंग्रेजों ने चीन के साथ किसी भी संभावित संघर्ष से बचने के लिए 'तिब्बत का पूर्ण अधिग्रहण करके बफर जोन तथा तिब्बत की स्वायत्ता दोनों को समाप्त कर दिया। डोकलाम भारत की सुरक्षा से जुड़ा मुद्दा है। इसकी भौगोलिक अवस्थिति ट्राइ–जंक्शन की है। जहां भारत, चीन व भूटान की सीमाएं मिलती हैं। यह ट्राइ–जंक्शन नाथुला दर्रा से मात्र 15 किलोमीटर की दूरी पर है।[1] डोला भारत का हिस्सा नहीं है। डोकलाम को भूटान तथा चीन दोनों अपना हिस्सा मानते हैं। भारत इसे भूटान का भाग मानता है। विवाद की वास्तविक शुरुआत तब हुई जब जून के प्रारम्भ में चीन ने इस क्षेत्र में सड़क निर्माण का कार्य शुरू किया।[2]

''भूटान'' ने चीन के इस कदम का जमीनी तथा राजनीतिक रूप से कई बार विरोध किया।[3] भूटान का आरोप है कि चीन का यह कदम 1988 तथा 1998 के चीन–भूटान समझौते का उल्लंघन है।[4] जिसके अनुसार चीन तथा भूटान डोकलाम क्षेत्र में शांति बनाए रखने का कार्य करेंगे।[5] भारत के विदेश मंत्रालय ने चीन के इस कदम का इलाके की मौजूदा स्थिति में बदलाव माना।[6] सड़क निर्माण से चीन एक बड़े सैन्य लाभ की स्थिति में होगा क्योंकि भारतीय सेना इस इलाके को 'चिकन नेक' मानती है। युद्ध की स्थिति में डोकलाम से चीन सीमा पूरे पूर्वोत्तर भारत को शेष भारत से काट सकती है।

भारत ने 1949 तथा 2007 के भारत–भूटान के बीच के रक्षा समझौते के आधार पर भारत ने चीनी सीमा के सड़क निर्माण से रोक दिया। तत्पश्चात् लगभग 72 दिनों के गतिरोध के बाद चीन–भारत की सेनाएँ वापस लौट गयीं। यह भारत की एक बड़ी कूटनीतिक जीत है। चीन द्वारा लगातार युद्ध की धमकियों के बाद भी भारत के कूटनीतिक संयम ने इस विवाद को निपटाने में मदद की।

Scanned by CamScanner